मैं और मेरा देश

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

लेखक परिचय – कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म सन् 1906 ई. में सहारनपुर जिले के देवबंद ग्राम में हुआ था। प्रारंभ से ही राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि होने के कारण आपको अनेक बार जेल-यात्राएँ करनी पड़ी।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने 'ज्ञानोदय', 'नया जीवन' और 'विकास' नामक पत्रों का सम्पादन कार्य किया है। मिश्रजी गांधीवादी थे। विचारों की उच्चता, आचरण की पवित्रता, और जीवन की सादगी आपके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ थी। प्रभाकर जी ने अपने वैयक्तिक स्नेह एवं सामर्थ्य से भी हिन्दी के अनेक नये लेखकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया है। मिश्रजी का निधन सन् 1995 में हुआ।

मिश्रजी ने निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज लिखे हैं। रिपोर्ताज लेखन में वे सिद्धहस्त थे। छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर जीवन के बड़े सत्यों का उद्‌घाटन बड़ी ही सहजता के साथ सफलतापूर्वक करते थे। गंभीर विषयों पर सरल और सरस शैली में लिखी गईं आपकी रचनाएँ पाठकों को सहज ही आकर्षित करती हैं। ये रचनाएँ प्रेरणास्पद, उद्‌बोधक और मर्मस्पर्शी हैं।

प्रमुख रचनाएँ – निबंध : 'जिन्दगी मुस्कुराई', 'माटी हो गई सोना', 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'दीप जले-शंख बजे' आदि। निबंध संग्रह में ही कुछ संस्मरण और रेखाचित्र समाविष्ट हैं।

रिपोर्ताज : 'क्षण बोले : कण मुस्कुराए'

लघु कथा संग्रह : 'धरती के फूल' आदि।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने व्यक्ति के जीवन-विकास में घर, नगर, समाज की भूमिका का उल्लेख करते हुए देश के प्रति उसके कर्तव्य बोध को जागृत करने के सार्थक सूत्र प्रदान किए हैं। देश की स्वतंत्रता को मूल्यवान माना है – व्यक्ति और देश के अंतर्संबंधों को व्याख्यायित करते हुए निबंधकार ने देश के गौरव और सम्मान की प्रतिष्ठा के लिए प्रत्येक व्यक्ति की देश-निष्ठा को रेखांकित किया है। अनेक उदाहरणों के माध्यम से इस तथ्य को प्रतिपादित किया है कि व्यक्ति जिस प्रकार अपने सम्मान और अपने लोगों के प्रति चिंतित रहता है, वैसी ही चिंता उसे अपने देश के प्रति भी रखना है। व्यक्ति के आचरण से ही देश के गौरव और सम्मान का निर्धारण किया जाता है। व्यक्ति का चिंतन देश परक होगा तो देश की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। अपने देश के गौरव को बढ़ाने के लिए निबंधकार ने स्पष्ट किया है कि देश के प्रत्येक नागरिक को अपने भीतर देश के लिए शक्ति बोध और सौन्दर्य बोध जागृत करना पड़ेगा। व्यक्ति कमजोर पड़ता है तो देश कमजोर पड़ता है। व्यक्ति अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखता है, तो वह देश के सौन्दर्य को ही बढ़ा रहा है। देश के लिए नागरिक की भी जिम्मेदारियाँ बनती हैं, उन्हें पूरा करके ही वह देश को समुन्नत और सुंदर बना सकता है। निबंध दृष्टांत शैली में रचा गया है इसलिए सहज, बोधगम्य है।

मैं और मेरा देश

मैं अपने घर में जनमा था, पला था।

अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा बड़ा हुआ था।

अपने नगर में घूम-फिर कर, वहाँ के विशाल समाज का सम्पर्क पा, वहाँ से संचित ज्ञान-भण्डार का उपयोग कर, उसे अपनी सेवाओं का दान दे, उसकी सेवाओं का सहारा पाकर और इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।

मैं अपने नगर के लोगों का सम्मान करता था, वे भी मेरा सम्मान करते थे।

मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत या उनके लिए जवाब था।

इस तरह मैं समझ रहा था कि मैं अपने में अब पूरा हो गया हूँ, पूरा फैल गया हूँ, पूरा मनुष्य हो गया हूँ।

एक दिन आनन्द की इस दीवार में दरार पड़ गई; और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ोस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनन्द के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है; हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी कोई भी अपमान कर सकता है, एक मामूली अपराधी की तरह; और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उससे अपमान का बदला लेना तो दूर रहा उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना कर सकूँ।

क्या कोई भूकम्प आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई ?

जी हाँ एक भूकम्प आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई; और लीजिए आपको कोई नया प्रश्न न पूछना पड़े, इसलिए मैं अपनी ओर से ही कह रहा हूँ कि यह दीवार थी मानसिक विचारों की, इसलिए यह भूकम्प भी किसी प्रान्त या प्रदेश में नहीं उठा; मेरे मानस में ही उठा था।

मानस में भूकम्प उठा था ?

हाँ जी, मानस में भूकम्प उठा था; और भूकम्प क्या - कोई धरती थोड़े ही हिली थी, आकाश थोड़े ही काँपा था, एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही भूकम्प था, जिसने मुझे हिला दिया।

वे तेजस्वी पुरुष थे स्वर्गीय पंजाब-केसरी लाला लाजपत राय। अपने महान् राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाये और जो घोर अंधकार और भयंकर बवण्डरों के झकझोरों में जीवनभर खेल, उन दीपकों को बुझने से बचाते रहे, उन्हीं में एक थे वे लालाजी। उनकी कलम और वाणी दोनों में तेजस्विता की अद्‌भुत किरणें थी।

उनका वह अनुभव यह था। मैं अमेरिका गया, इंग्लैण्ड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा। क्या सचमुच यह अनुभव एक मानसिक भूकम्प नहीं है, जो मनुष्य को झकझोर कर कहे कि किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में ही हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

लो, एक और बात बताता हूँ आपको - जीवन को दर्शनशास्त्रियों ने बहुमुखी बताया है। उसकी अनेक धाराएँ हैं। सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है; और युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता। लड़ने वालों को रसद न पहुँचे तो वे कैसे लड़ें। किसान ही खेती न उपजाए तो रसद पहुँचाने वाले क्या करें और लो, जाने दो बड़ी बातें - युद्ध में जय बोलने वालों का भी महत्व है।

जय बोलने वालों का ?

हाँ जी, युद्ध में जय बोलने वालों का भी बहुत महत्व है। कभी मैच देखने का अवसर मिला ही होगा आपको! देखा नहीं आपने कि दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है; और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं। कवि-सम्मेलनों और मुशायरों की सफलता दाद देने वालों पर निर्भर करती है। इसलिए मैं अपने देश का कितना भी साधारण नागरिक क्यों न हूँ, अपने देश के सम्मान की रक्षा के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। अकेला चना क्या भाड़ फोड़े – यह कहावत, मैं अपने अनुभव के आधार पर ही आपसे कह रहा हूँ – कि सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है; और ऐसा फोड़ा है कि भाड़ में खिल-खिल ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमन्तर हुआ कि कोई यह भी न जान पाया कि वह बेचारा आखिर था कहाँ ?

हमारे देश के महान सन्त स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे कि एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले और उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी तो वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, पर वे पा न सके। उनके मुँह से निकला-जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।

एक जापानी युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था। वह अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था। उसने यह शब्द सुन लिए। सुनते ही वह अपनी बात बीच में छोड़ कर भागा और काफी दूर से एक टोकरी ताजे फल लाया। वे फल उसने स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा – लीजिए, आपको ताजे फलों की जरूरत थी।

स्वामी जी ने समझा कि यह कोई फल बेचने वाला है और उसके दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इन्कार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा : आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

स्वामी जी युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए, और वे क्या मुग्ध हो गए उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव जाने कितना बढ़ा दिया।

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान आप दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगा सकते हैं। एक दूसरे देश का निवासी एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से एक पुस्तक पढ़ने को लाया जिसमें कुछ दुर्लभ चित्र थे। ये चित्र इस युवक ने पुस्तक में से निकाल दिए और पुस्तक वापस कर आया। किसी जापानी विद्यार्थी ने यह देख लिया और पुस्तकालय को इसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे में बरामद किए, और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।

मामला यहीं तक रहता तो कोई बात न थी। अपराधी को दण्ड मिलना ही चाहिए। पर मामला यहाँ तक नहीं रुका और पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि उस देश का (जिसका वह विद्यार्थी था) कोई निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

मतलब साफ है, एकदम साफ – कि जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं एक युवक ने अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

इन घटनाओं से क्या यह स्पष्ट नहीं है कि हरेक नागरिक अपने देश के साथ बँधा हुआ है और देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल उसके देश को मिलता है।

मैं अपने देश का नागरिक हूँ; और मानता हूँ कि मैं अपना देश हूँ। जैसा मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बात पर ध्यान देता हूँ, वैसा ही मैं अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दूँ। यह मेरा कर्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों से अपने जीवन में सहारा पाता हूँ, वैसे ही देश के सम्मान और साधनों से भी सहारा पाऊँ-यह मेरा अधिकार है। बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है, और छोटे से छोटा कार्य भी महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

महान कमालपाशा उन दिनों अपने देश तुर्की के राष्ट्रपति थे। राजधानी में उनकी वर्षगाँठ का उत्सव समाप्त कर जब वे अपने भवन में ऊपर चले गए, तो एक देहाती बूढ़ा उन्हें वर्षगांठ का उपहार भेंट करने आया। सेक्रेटरी ने कहा, ''अब तो समय बीत गया है।'' बूढ़े ने कहा, ''मैं तीन मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देर हो गई''

राष्ट्रपति तक उसकी सूचना भेजी गई, कमालपाशा विश्राम के वस्त्र बदल चुके थे, वे उन कपड़ों में नीचे चले आए, और उन्होंने बूढ़े किसान का उपहार स्वीकार किया। यह उपहार मिट्टी की छोटी हँडिया में पाव भर शहद था, जिसे बूढ़ा स्वयं तोड़कर लाया था। कमालपाशा ने हँडिया को स्वयं खोला और उसमें से दो उँगलियाँ भरकर चाटने के बाद तीसरी उँगली में भरकर बूढ़े के मुँह में दे दी, बूढ़ा निहाल हो गया।

राष्ट्रपति ने कहा – दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है। उन्होंने आदेश दिया कि राष्ट्रपति की शाही कार में शाही सम्मान के साथ उनके दादा को गाँव तक पहुँचा आए।

क्या यह शहद बहुत कीमती था ? क्या उसमें मोती-हार मिले हुए थे ? ना, उस शहद के पीछे उसके लाने वाले की भावना थी जिसने उसे सौ लालों का एक लाल बना दिया।

हमारे देश को दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है। एक शक्तिबोध और दूसरा सौन्दर्य बोध। बस, हम यह समझ लें कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमजोरी की भावना को बल दे या कुरुचि की भावना को ही।

जरा अपनी बात को और स्पष्ट कर दीजिए। यह आपकी राय है और मैं इससे बहुत खुश हूँ कि आप मुझसे यह स्पष्टता माँग रहे हैं।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिर खानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर-बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और गड़बड़ है, बड़ी परेशानी है, साथ ही इन स्थानों में या किसी तरह के दूसरे स्थानों में आप कभी अपने देश के साथ दूसरे देशों की तुलना करते हैं और इस तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देश को श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता है।

यदि इस प्रश्न का उत्तर हाँ है तो आप देश के शक्ति बोध को भयंकर चोट पहुँचा रहे हैं और आपके हाथों देश के सामूहिक मानसिक बल का ह्रास हो रहा है। सुनी है आपने शल्य की बात ? यह महाबली कर्ण का सारथी था। जब भी कर्ण अपने पक्ष में विजय की घोषणा करता, हुंकार भरता, वह अर्जुन की अजेयता का एक हल्का सा उल्लेख कर देता। बार-बार के इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्म विश्वास में सन्देह की तरेड़ डाल दी जो उसके भावी पराजय की नींव रखने में सफल हो गई।

अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते! तो मैं दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं ? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं या मुँह से गन्दे शब्दों में गन्दे भाव प्रकट करते हैं ? इधर की उधर,उधर की इधर लगाते हैं ? अपना घर, दफ्तर, गली गन्दा रखते हैं ? होटलों - धर्मशालाओं में या ऐसे ही दूसरे स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं ? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरुचि और सौन्दर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?

यदि आपका उत्तर हाँ है,तो आपके द्वारा देश के सौन्दर्य-बोध को भंयकर आघात पहुँच रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तौल सकें।

लीजिए, चलते-चलते आपके इस प्रश्न का उत्तर दे ही दूँ । इस उच्चता और हीनता की कसौटी ह चुनाव।

जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है, जहाँ के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन हैं।

इसलिए मैं कह रहा हूँ कि मेरा यानी हरेक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें; और मेरा अधिकार है कि मेरा मत दिए बिना कोई भी आदमी, वह संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष ही क्यों न हो, किसी अधिकार की कुर्सी पर न बैठ सके।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. पंजाब केसरी के नाम से कौन जाना जाता है?
2. 'दीवार में दरार पड़ गई' का आशय किस से है?
3. जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फल के मूल्य के रूप में क्या माँगा ?
4. बूढ़े किसान ने राष्ट्रपति को कौन सा उपहार दिया ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. तेजस्वी पुरुष लाला लाजपत राय की दो विशेषताएँ कौन सी थीं ?
2. देहाती बूढ़ा कमाल पाशा के पास क्यों गया था?
3. स्वामी रामतीर्थ जापानी युवक का उत्तर सुनकर क्यों मुग्ध हो गए। ?
4. लेखक के अनुसार हमारे देश को किन दो बातों की सर्वाधिक आवश्यकता है ?
5. देश के सामूहिक मानसिक बल का ह्रास कैसे हो रहा है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'जय' बोलने वालों का महत्व प्रतिपादित कीजिए।
2. जापान में शिक्षा लेने आए विद्यार्थी की कौन सी गलती से उसके देश के माथे पर कलंक का टीका लग गया ?
3. देश के शक्तिबोध को चोट कैसे पहुँचती है ?
4. 'देश के सौन्दर्य बोध को आघात लगता है तो संस्कृति को गहरी चोट लगती है', इस कथन की विवेचना कीजिए ?
5. देश के लाभ और सम्मान के लिए नागरिकों के कर्तव्यों का वर्णन कीजिए ।

भाषा अध्ययन -

निम्नलिखत सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का नाम बताइए –
आजीवन, भरा-पूरा, महापुरुष, एकदंत, चौराहा

ध्यान से पढ़िए

- पुस्तकालय को इसकी सूचना दे दी।
- लालाजी ने महान राष्ट्र को पराधीनता से बचाने का प्रयास किया।
- आज सर्वोत्तम उपहार तुमने हमें दिया।

उपयुक्त रेखांकित शब्द दो शब्दों के मेल से बने हैं।

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय – अ+आ=आ

पराधीनता = पर + आधीनता – अ+आ=आ

सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम – अ+उ=ओ

जब दो ध्वनियाँ आपस में मिल जाती है तब वहाँ संधि होती है –

संधि के तीन प्रकार हैं –

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर सन्धि – दो निकटतम स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं इसके पाँच भेद है।

(1) दीर्घ स्वर संधि (2) गुण स्वर संधि (3) वृद्धि स्वर संधि (4) यण स्वर संधि

(5) अयादि स्वर संधि

दीर्घ स्वर सन्धि नियमी करण – ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, के आगे ह्रस्व या दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ, आए तो दोनों मिलकर क्रमशः आ,ई,ऊ बन जाते हैं।

यथा – अ+अ=आ – मत+अनुसार = मतानुसार

अ+आ=आ – परम+आनंद = परमानंद

आ+आ=आ – महा+आत्मा = महात्मा

इ+इ=ई – रवि+इन्द्र = रवीन्द्र

उ+उ=ऊ – लघु+उत्तरीय = लघूत्तरीय

दो सजातीय या समान स्वरों के मेल से स्वरों में जो परिवर्तन होता है, उसे दीर्घ स्वर सन्धि कहते हैं।

गुण स्वर संधि (नियमी करण) -

1. यदि अ या आ के आगे इ या ई आए तो दोनों के मिलने पर ए बनता है।
2. यदि अ या आ के आगे उ या ऊ आए तो दोनों के मिलने पर ओ बनता है।
3. यदि अ या आ के आगे ऋ आए तो दोनों के मिलने पर अर बनता है।

यथा – अ+इ = ए – देव+इन्द्र = देवेन्द्र

आ+उ = ओ – महा+उदय = महोदय

आ+ऋ = अर् – महा+ऋषि = महर्षि

उपरोक्त नियमों के अन्तर्गत आने वाले शब्दों को हम गुण स्वर सन्धि कहते हैं, अतः कह सकते हैं कि – यदि अ या आ के बाद इ या ई या उ या ऊ अथवा ऋ आए तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर हो जाता है इसे गुण स्वर संधि कहते है।

वृद्धि संधि -

नियमीकरण – 1. यदि अ,आ के बाद ए,ऐ आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं।

2. यदि अ, आ के बाद ओ, औ आए तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

अ + ए	= ऐ	–	एक	+ एक	=	एकैक
आ + ए	= ऐ	–	सदा	+ एव	=	सदैव
अ + ऐ	= ऐ	–	मत	+ ऐक्य	=	मतैक्य
आ + ऐ	= ऐ	–	महा	+ ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
अ + ओ	= औ	–	दंत	+ ओष्ठ	=	दंतौष्ठ
आ + ओ	= औ	–	महा	+ ओज	=	महौज
अ + औ	= औ	–	परम	+ औषधि	=	परमौषधि
आ + औ	= औ	–	महा	+ औषधि	=	महौषधि

यदि अ, आ के बाद ए या ऐ आए तो मिलकर ऐ तथा यदि ओ या औ आए तो मिलकर औ हो जाते हैं। इस क्रिया को वृद्धि स्वर संधि कहते हैं।

अन्य स्वर सन्धि के नियम निम्नानुसार हैं –

यण संधि -

नियमीकरण – 1. यदि इ, ई के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ, ई का 'य' हो जाता है।

2. यदि उ,ऊ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो उ,ऊ का व हो जाता है।

3. यदि ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ऋ का 'र' हो जाता है।

इ + अ	= य	–	अति	+ अधिक	=	अत्यधिक
इ + आ	= या	–	इति	+ आदि	=	इत्यादि
ई + अ	= य	–	नदी	+ अर्पण	=	नद्यर्पण
ई + आ	= या	–	सखी	+ आगमन	=	सख्यागमन
इ + उ	= यु	–	प्रति	+ उत्तर	=	प्रत्युत्तर
इ + ऊ	= यू	–	नि	+ ऊन	=	न्यून
इ + ए	= ये	–	प्रति	+ एक	=	प्रत्येक
ई + ऐ	= यै	–	देवी	+ ऐश्वर्य	=	देव्यैश्वर्य
उ + अ	= व	–	सु	+ अच्छ	=	स्वच्छ
उ + आ	= वा	–	सु	+ आगत	=	स्वागत
उ + इ	= वि	–	अनु	+ इति	=	अन्विति
उ + ए	= वे	–	अनु	+ एषण	=	अन्वेषण
ऋ + अ	= र	–	पितृ	+ अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ + आ	= रा	–	मातृ	+ आज्ञा	=	मात्राज्ञा
ऋ + इ	= रि	–	मातृ	+ इच्छा	=	मात्रिच्छा

ह्रस्व अथवा दीर्घ इ,उ, ऋ के बाद यदि कोई भिन्न स्वर आता है तो इ, ई के बदले 'य' तथा उ ऊ के बदले 'व' एवं ऋ के बदले 'र' हो जाता है तो उसे यण स्वर संधि कहते हैं।

इसी प्रकार स्वर सन्धि के अन्य प्रकार हैं, जिसमें –

अयादि संधि -

नियमीकरण – 1. यदि ए,ऐ,ओ, औ, से आगे कोई इनसे भिन्न स्वर आता है तो ए, का 'अय्' , ऐ का 'आय्' ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है।

ए	+ अ	= अय्	–	ने	+ अन	=	नयन
ऐ	+ अ	= आय्	–	गे	+ अक	=	गायक
ओ	+ अ	= अव्	–	पो	+ अन	=	पवन
औ	+ अ	= आव्	–	पौ	+ अन	=	पावन
औ	+ इ	= आवि	–	नौ	+ इक	=	नाविक
औ	+ उ	= आवु	–	भौ	+ उक	=	भावुक

ए, ऐ, ओ, औ के बाद जब कोई भिन्न स्वर आता है तब ए के स्थान पर 'अय्', ओ के स्थान पर 'अव्', ऐ के स्थान पर 'आय्' एवं औ के स्थान पर 'आव्' हो जाता है। इसे ही अयादि स्वर संधि कहते हैं।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए –

लघूत्सव, परमानन्द, सूर्योदय, नायक, वनौलक्ष

प्रश्न 4 निम्न शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए प्रयुक्त सन्धि का नाम लिखिए

यद्यपि, लंकेश, दिनेश, देवर्षि।

योग्यता-विस्तार

1. देश के महापुरुषों के चित्र खोजकर अभ्यास पुस्तिका पर चिपकाइए।
2. अपने क्षेत्र के स्वतंत्रता – संग्राम सेनानियों की सूची तैयार कीजिए।
3. विद्यालय में एक प्रश्न मंच का आयोजन कर 'छात्रों का उत्तरदायित्व' विषय पर प्रश्नोत्तर सत्र कीजिए ।
4. लाला लाजपतराय और भगतसिंह के प्रंसग पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

शब्दार्थ

ममता = अपनापन, प्रेम। **अपील** = पुनर्विचार का प्रार्थना पत्र। **बहुमुखी** = जीवन के अनेक क्षेत्र का अनुभव करने वाला। **रसद** = खाद्य सामग्री। **कामचोरी** = कार्य करने से जी चुराना। **सारथी** = रथ चलाने वाला। **दफ्तर** = कार्यालय। **ठेस** = आघात या चोट ।